कहानी

मरनपंखी

- सावन कुमार

कथाकार-परिचय

सावन कुमार
शिक्षा : स्नातक
जन्म : 2 अक्टूबर 1985, मालगोदाम, नवादा-805110 (बिहार) में
क्षेत्र : लेखन, अध्यापन, चित्रकर्म एवं रंगकर्म
सह संपादक : 'मेरी अभिव्यक्ति' (हिन्दी त्रैमासिक)
रचनाएँ प्रकाशित : 'मेरी अभिव्यक्ति', 'माटी के महक' (मगध विश्वविद्यालय, बोध गया के स्नातकोत्तर विभाग के मगही-पाठ्यक्रम में शामिल), 'मगही पत्रिका' जैसी कई पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में कहानियाँ, कविताएँ, रेखाचित्र आदि हिन्दी एवं मगही में प्रकाशित
संप्रति : ग्रामीण विकास कार्य
संपर्क : द्वारा, डॉ. गोपाल निर्दोष, 'सी.पी.निवास', प्रोफेसर कॉलोनी, मालगोदाम, नवादा-805110 (बिहार)
मो.नं. : 7352274112
ईमेल : sawankumar21085@gmail.com

खूरी नदी के कमर-भर पानी में उछलते-कूदते बच्चों को देखकर उसके मन की पीड़ा भले ही शांत नहीं होती थी लेकिन कुछ कम जरुर हो जाती थी.

सूर्य मंदिर की टन-टन बजती घंटी और श्रद्धालुओं के जमघट से लगभग चार बाँस दूर धोबी-घाट के पास वह शून्य में निहारता हुआ दो-दो पहर बिता देता था. उस समय उसका ये

अकेलापन उसके मन को बड़ा सुकून देता था लेकिन उसके इस सुकून को उस समय धक्का लग जाता था और मन कसैला हो जाता था जब नदी की दूसरी तरफ आसमान छूती ऊँची-ऊँची इमारतों पर उसकी नजर पड़ जाती थी...इसी तरह के घर का उसका सपना था. लेकिन, उसका सपना कब साकार होगा...बिरजू को समझ में नहीं आ रहा था. अपने इस सपने को साकार करने के लिए ही आज उसे इंतजार था एक आदमी का, जिसके सूटकेस में होगा – रुपयों की गड्डी, दो-दो हजार रुपयों की गड्डी...एकदम लाल-लाल...

अब, उसका मन उन लाल-लाल नोटों की गड्डी को देखने के लिए जोर मारने लगा था. उसे इंतजार करना खराब लगता था...वह इंतजार चाहे किसी व्यक्ति का हो, चाहे अपने सपने के साकार होने का...

लगभग रोज यहीं पर उसकी बैठक होती थी नटुआ, सुरजू, भीखू और सुरेन्दर जैसे लफंगों के साथ. बिरजू को भी बुलाया जाता था और ताड़ी की पार्टी चलती थी...बेर डूबने के बाद तक.

आज भी उसे बुलाया गया था...लेकिन, आज उसे बुलाया था उसकी अतिशय महत्त्वाकांक्षा ने, उसके सपने ने... उसे छीलकर रसगुल्ला खानेवाले लोग अच्छे लगते थे. वह हर काम में शार्टकट चाहता था. कम समय में अधिक पैसा, आराम, चकल्लस...इससे कम बिरजू की दृष्टि में जिंदगी का कोई अर्थ नहीं था.

जिसका उसे इंतजार था, वह तय समय से मात्र बीस मिनट की देर से पहुँचा था. मात्र इतनी-सी देर से बिरजू गुस्से से पागल हुआ जा रहा था. जब तक उस व्यक्ति ने उससे हाथ जोड़ कर माफ़ी नहीं माँग ली, तब तक वह गुस्से का भूत बना रहा. समझने-समझाने की रस्म के बाद काम की बात शुरु हुई. आनेवाले व्यक्ति ने अपनी जेब से एक फोटो निकालकर उसे देते हुए कहा, "फोटो के पीछे इसका नाम, पता आदि सबकुछ है."

बिरजू ने उस फोटो को झपट कर अपने अंदर की जेब में रख लिया और सूटकेस की ओर हाथ बढ़ा दिया. उस व्यक्ति ने उस सूटकेस को बिरजू की ओर बढ़ाते हुए कहा, "बीस हजार अभी और तीस हजार काम हो जाने के बाद..."

...सुनकर एक बार फिर बिरजू का पारा गरम हो गया, "बस पचास हजार...लल्लू समझते हो क्या मुझे...करोड़पति आदमी की मौत की कीमत बस पचास हजार...नहीं, इतने में काम नहीं होगा...हम जानते हैं कि वह तुम्हारा सौतेला बाप है...और उसके मरने के बाद तुम हो जाओगे करोड़पति...और मेरे लिए बस पचास हजार का लेमनचूस...?"

इस बार त्यौरियाँ चढाने की बारी थी उस आदमी की, "देखो बिरजू, तुम अपने काम से काम रखो, मेरा ठेका मत लो...एक लाख दे देंगे...ठीक से काम करना...ऊपर से बख्शीश भी दे देंगे...अब जाओ..."

...कह कर वह आदमी अपने आने की उल्टी दिशा में चला गया और इधर बिरजू अपने मालिक के बोलेरो पर बैठ गया. वह अपने पंचायत के मुखिया की गाड़ी चलाता था.

गाड़ी की स्टेयरिंग पर तो उसने अपना हाथ रख दिया लेकिन उसे आगे का रास्ता सूझ ही नहीं रहा था. वह अपने-आपसे बतियाने लगा, "इस सूटकेस को अभी तुरंत कहाँ रखूँ...कहीं मीना की माँ को पता चल गया तो वह पूरे टोले को अपने सर पर उठा लेगी...बददिमाग जो ठहरी. एक दिन जो देर से घर लौटते हैं तो पचास सवाल करती है...इतना पैसा देखते ही पूरे टोले को इंजोर कर देगी...खूब माथापच्ची करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि इस पैसे को रात-भर के लिए इस गाड़ी में ही रहने देना है...सुबह तक कोई और रास्ता सोच लिया जाएगा."

गाड़ी को घर के पिछवाड़े लगा कर बिरजू आ गया अपनी कोठरी के एक कोने में बनी कलाली में. खटोले के नीचे से उसने कल के बचे महुए के दारू को निकाल लिया. उधर मीना की माँ गरई (एक प्रकार की मछली) का चोखा बना रही थी. एक गिलास में बिना पानी मिलाए बिरजू बाय के झोंक में पूरा दारू घिच (खींच) लिया. धीरे-धीरे दारू का नशा उसके दिमाग पर चढ़ने लगा और वह घूमने लगा रंग-बिरंगे सपनों की दुनिया में...दुतल्ला मकान, दुआरी पर चरचकिया (चौपहिया), कमरे में फ्रिज, फ्रिज में बर्फ, बर्फ डाल के सोडा...गटाक्...और सब सोड्डा (गड़बड़) हो गया. सपना देखते-देखते उसका सिर आगे की टेबुल पर पटका गया और बोतल का बाकी दारू लुढ़क गया उसके खटोले पर. पूरा बिछावन दारू से भींग गया. बस, फिर क्या था...मीना की माँ की भुनभुनाहट शुरु हो गई...और इस तरह बिरजू का सपना बिखर गया, उसका मन कसैला हो गया.

एक मन तो बिरजू का हो रहा था कि अपनी आगामी योजना की शुरुआत इस भुनभुनानेवाली का गला टीप करके कर दूँ लेकिन वह यह सोचकर अपना मन मसोस कर रह गया कि, "जिस गले में आज तक कभी रोल्ड-गोल्ड की भी सिकड़ी (चेन) नहीं पहनाया, उस गले को टीप कैसे दूँ...इस लंद-फंद के फेरा में कभी-कभी महीना-भर गायब रहना पड़ता है...तो उस समय बेचारी मीना...हमारी दुलारी का क्या होगा...?"

इसी बीच उसका ध्यान दीवार के पार खड़ी गाड़ी में रखे पैसे पर चला गया...एकबारगी उसका पूरा शरीर सिहर गया. अपनी इस सिहरन पर नियंत्रण करने के लिए उसने खटोले के नीचे लुढ़के बोतल पर नजर डाला. उसका मन फिर कसैला हो गया..स्साली ने गला भी नहीं भिंगाया..." यही सोचते-सोचते वह न जाने फिर कब दूसरी दुनिया में खो गया...एकदम अकेले...

बिरजू मुखिया जी की गाड़ी चलाता था. वेतन तो घर-खर्चा चलाने लायक भी नहीं था. लेकिन, खाने और पीने-भर उसकी कमाई इधर-उधर से हो जाती थी. इसी अधिक कमाई की लालच में वह मुंबई भी गया था लेकिन उसे वहाँ का पानी ही सूट नहीं किया और तीन महीने की मजदूरी के रूप में कालाजार लेकर वह वापस आ गया.

वापसी में वह एक और चीज अपने साथ लेकर आया था...अपनी आँखों में बड़े-बड़े सपने, आसमान छूते मकान, चमचमाती गाड़ी, ठाट-बाट और झक्कास जिंदगी. उस चमक-दमक में वह अपनी औकात भूल गया था. एक महीना तो वह बैठे-बैठे सपने देखने में और सफलता का शार्टकट

ढूँढने में बिता दिया लेकिन एक दिन जब मुखिया जी को अपने बोलेरो के लिए ड्राईवर की जरूरत पड़ी तब जाकर जेब-खर्चा ही सही, उसके कुछ जरूरतों की पूर्ति होने लगी. तीन हजार के वेतन में क्या-क्या होता...घर का खर्चा, मीना की पढ़ाई का खर्चा, अपने दारू का खर्चा...महीना पूरा होने से पहले सब खत्म.

सौदा तय होने के तीन दिनों के बाद ही बिरजू के मन का दबा उमंग जोर मारने लगा. सोचा, क्यों नहीं बैंक से पैसे निकालकर फ्रिज ले आया जाए. मीना की माँ पूछेगी तो बता देंगे कि लौटरी में बीस हजार रुपए निकले हैं. आज इसी बहाने एक सपना पूरा कर लिया जाए...और शाम होते-होते फ्रिज आ भी गया. मुखिया जी की कृपा से बिजली फ्री थी ही. फ्रिज के कारण बिरजू टोले का हीरो हो गया था. अपने दूसरे सपने का वह हिसाब लगा ही रहा था कि उसके मोबाइल का रिंगटोन बजने लगा...'हलो, बिरजू बाबू हैं?'

"हाँ, हम बिरजू ही बोल रहे हैं"

"पहचाने, हम आपको एक सूटकेस..."

"जी, हाँ...हाँ...हमें याद है, कर देंगे."

"दरअसल, आपको हमें ये बताना था कि डॉक्टर ने अब उसे मॉर्निंग वाक करने से मना कर दिया है इसलिए अब वह सुभाष पार्क में नहीं मिलेगा...एक हफ्ता के बाद वह अच्छे इलाज के लिए दिल्ली जानेवाला है...जाएगा तो आगे की योजना बता दूँगा..."

इतना कहने के बाद उसने फोन काट दिया. बिरजू का कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा. वह अपने अचानक की घबराहट को शांत करने के लिए अपनी आँत में कुछ दारू झोंकने को चाह ही रहा था कि मीना की माँ दनदनाती हुई आई और उसके हाथ से गिलास झटक ली और लगी गला फाड़ने, "रोज-रोज यही डरामा करना रहता है तो खाना क्यों बनवाते हैं...पहले खाना खा लीजिये और फिर जो मन में आए, करते रहिये..."

एकबारगी तो गुस्से से फनफना गया बिरजू. उसके और दारू के बीच दीवार बननेवाला कोई भी शख्श उसे जरा भी पसंद नहीं था लेकिन इस समय किसी प्रकार का बखेड़ा खड़ा करना नहीं चाह रहा था इसलिए वह मन मसोस कर रह गया.

रोटी तोड़ते-तोड़ते उसके दिमाग में यही चल रहा था कि उसका अगला कदम क्या होगा. वह कोई भी काम लटका कर नहीं रखना चाहता था...लेकिन एक यह काम था कि लंबा ही खिंचता चला जा रहा था. जो भी हो, किसी बात के इंतजार का भी अपना ही मजा है या यों कहें कि कुछ अलग ही मजा है और यही मजा बढ़ाएगा पैसे की अगली खेप यानी किसी की पुरानी जिंदगी खत्म और मेरी नई जिंदगी शुरु...

बिरजू ऐसा सोचते-सोचते खोता चला जा रहा था दूसरी दुनिया में...कि, अब देशी की जगह विदेशी चलेगा, घर में रंगीन टीवी होगी, मकान की जगह महल होगा और देखनेवाले देखते रह जाएँगे...वो गनौरी साव, मनोहर मास्टर, वर्मा जी, महेश मिस्त्री...सब के सब...

बिरजू का आदर्श था नटुआ, सुरजू, सुरेन्दर आदि जो ये ही सब करते हुए करोड़ों का मालिक बन गया था. समाज में हजारों-लाखों रूपए का चंदा देता था और इज्जत भी खूब पा रहा था समाज से. प्रशासन तो उसके आगे-पीछे लगा रहता था. नाम चमकता था उन सबों का. नटवर बाबू, बाबू सूर्यनारायण, सुरेन्द्र प्रताप...वैसे ही मेरा नाम चमकेगा – बिरिजनंदन प्रसाद...और तब ये ही टोले-मोहल्ले के लोग मेरे आगे-पीछे करेंगे. और, फिर वह डूब गया सोडे की पिनक में.

सुबह-सुबह मोबाइल बजा, "हलो, बिरजू बाबू...आपको आज ही दिल्ली जाना होगा. वहाँ की सारी योजनाएँ एक कागज़ में लिखी हुई हैं. उसे लेकर एक कूरियरवाला आपके पास पहुँच ही रहा होगा...साथ में दूसरी खेप का पार्सल भी है..."

बताए हुए पते पर वह दिल्ली पहुँचा. होटल नवरंग, कमरा नंबर 218. वह कमरा गोपाल प्रसाद के नाम से बुक था. उसे खाली कराने के लिए बिरजू वहाँ पहुँच चुका था.

उस कमरे में एक आदमी अभी घुस ही रहा था. इससे पहले कि वह बुड्ढा दरवाजा बंद करता...बिरजू उसे धकेल कर उसी के कमरे में घुस गया. बिना कोई पल गँवाए उसने उसकी खोपड़ी से साइलेंसर लगी पिस्तौल सटाई और 'धड़ाक्' की आवाज के साथ बुड्ढा तुरंत वहीं ढेर हो गया. बड़ी फुर्ती से उसने इधर-उधर चौकन्नी निगाह दौड़ाई. एक बैग पर उसकी नजर पड़ी. उसने बैग उठाया और दरवाजे को पूर्ववत् सटा कर फुर्ती से खिसक लिया.

दो दिनों की भाग-दौड़ के बाद छुपते-छुपाते वह एक पर्यटक बन कर बोधगया पहुँच गया, जहाँ बुद्ध को ज्ञान मिला था. एक छोटे-से होटल में कमरा लिया और उस उस बुड्ढे के बैग की तलाशी में जुट गया. बैग को उसने पूरी तरह से खंगाल डाला. उसमें से उसे एक छोटा-सा रेडियो, एक मोबाइल, एक कलम, आठ हजार रुपए और एक वसीयतनामा मिला.

उसने कुछ देर रेडियो सुना. मोबाइल से सिम कार्ड निकाल कर उसे तोड़-मरोड़ डाला और वसीयतनामे का अध्ययन करने लगा.

उस वसीयतनामे का अध्ययन करने के बाद बिरजू को अपने-आपसे घिन आने लगी. उसकी आँखें ग्लानि से भर आईं. उसमें लिखा था कि उस बुड्ढे की सारी चल-अचल संपत्ति का चार हिस्सा किया जाए. उनमें से एक हिस्सा उसके सौतेले बेटे दिवाकर को और दूसरा हिस्सा ऐसी संस्था को दिया जाए जो निर्धन छात्रों की शिक्षा का प्रबंध करती हो. तीसरा हिस्सा किसी वृद्धाश्रम को दे दिया जाए और चौथा हिस्सा विकलांगों के कल्याण के लिए काम करनेवाली संस्था को दे दी जाए.

इतना ही नहीं, उसकी मौत के बाद उसके पूरे शरीर को किसी मेडिकल कॉलेज को सौंप दिया जाए ताकि उसके एक-एक अंग का सदुपयोग हो सके.

उस बुड्ढे के इस अनोखे वसीयतनामे को पढ़ कर बिरजू को अपने-आपसे नफरत होने लगी. वह सोचने लगा, "एक मैं हूँ जो हर तिकड़म लगा करके, बुरा-भला करके, चाहे जैसे भी हो...पैसा कमाना चाह रहा हूँ और एक वो बुड्ढा था जो पूरी जिंदगी जो कुछ भी कमाया...वह दूसरों के भले के लिए दान कर देना चाहता था. सबसे बड़ी बात तो ये है कि उसके शरीर का एक-एक अंग जरूरतमंदों के लिए समर्पित था...एक मेरा बाप था जो मुझे गरीबी देकर चला गया और मैं अमीर बनने के लिए मरा जा रहा हूँ...एक दिवाकर है जिसका सौतेला बाप उसे अमीरी देकर चला गया और वह बाप जैसे धन को अपने रास्ते से हटाने के लिए हर जुगाड़ में लगा रहा...उस बाप को जो सही मायने में देवता था...देवता...ओह, मुझसे कितना बड़ा अनर्थ हो गया...बहुत बड़ा अनर्थ..."

अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी-मूँछ और मैले-कुचैले कपड़े में वह जब अपने टोले में घुसा तब लोग उसे आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगे. लोगों के इस तरह से देखने पर उसे लग रहा था कि लोग उसे खूनी समझ कर उससे नफरत कर रहे हैं. अभी वह अपने दरवाजे के पास पहुँचा ही था कि एक आदमी उसके सामने से दौड़ कर दूसरी ओर निकल गया. बिरजू को लगा कि वह आदमी उसके बारे में पुलिस को बताने जा रहा है. उसकी साँसें जोर-जोर से चलने लगीं. वह घबरा कर जल्दी से अपने घर में घुस गया.

अंदर उसकी पत्नी बर्तन माँज रही थी. एक नजर में तो वह भी अपने पति को पहचान नहीं पाई और अगले ही पल वह लगातार सवाल दागने लगी, "ये क्या हालत बना रखी है आपने...कहाँ थे इतने दिन...क्या हो गया है आपको...कुछ कहते क्यों नहीं...?"

मीना उसे दूर से ही देख रही थी. बिरजू को लग रहा था कि वह सारी बातें जान गई है और वह अपने बाप से...उससे नफरत कर रही है.

ठीक उसी समय कोई उसका दरवाजा पीटने लगा. बिरजू को लगा कि पुलिस आ गई है...वह जल्दी से अंदर की ओर भागा. अंदर जाकर वह उसी चिर-परिचित खटोले के नीचे छिप गया. इस हड़बड़ी में उसकी जेब से उस बुड्ढे की तस्वीर निकल कर उसके सामने आ गई. बिरजू को लगा कि वह बूढ़ा उसकी इस हालत पर दया कर रहा है. वह ये पूछ रहा है, "क्यों बेटे, ये सब क्यों? मेरी संपत्ति के पाँच हिस्से लगा लो. पाँचवां हिस्सा तुम ले लो...वो आठ हजार रुपए भी ले लो...और चाहिए तो और दे देंगे...कोई अच्छा-सा रोजगार शुरु करो..."

बिरजू ने सिर उठाया तो सामने उसकी पत्नी थी. वह कह रही थी, "अभी दूधवाला आया था. आप खटोले के नीचे क्या कर रहे हैं जी?"

बिरजू बाहर निकल कर अपनी पत्नी से जोर से लिपट गया. वह फफक पड़ा, "मीना की माँ, इस खटोले के नीचे मैं अपनी जिंदगी खोज रहा था...मेरे जीवन का सबकुछ खो गया मीना की माँ...वो हँसी-बोली...सुख-चैन...सबकुछ..."

वह बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा. मीना की माँ उसे खटोले पर बिठाती हुई उससे कहने लगी, “मैं तो उसी दिन सब समझ गई थी, जिस दिन कूरियरवाले के बंडल को खोली और रुपए की ढेरी देखी...मेरी तो बुद्धि ही चकरा गई...वो लंबा-लंबा और लाल-लाल गाँधीछाप नोट देख कर.”

बिरजू के दिमाग में मीना की माँ के मुँह से ‘बुद्धि’ और ‘गाँधी’ शब्द सुन कर एक बार फिर बुद्ध बाबा और गाँधी बाबा की मूर्ति नाच गई...फिर दोनों की मूर्ति एक-दूसरे में मिल कर दिल्ली के होटलवाले उस बूढ़े गोपाल प्रसाद के रूप में बदल गई और वह स्वयं बन गया बुद्ध बाबा को सड़ा हुआ माँस खिला कर मार देनेवाला चुंद और गाँधी बाबा को गोली मार देनेवाला नाथूराम...और ये दुनिया अब उसे बाबू बिरजनंदन नहीं बल्कि चुंद, नाथूराम और खूनी बिरजू कह रही है.

अचानक उसे लगा कि लाचार, असहाय, गरीब, विकलांग, वृद्ध आदि की भीड़ उसे इस नाम से पुकार-पुकार कर खदेड़ रही है और वह भाग रहा है...भागते-भागते उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल ली और गोली चला दी...’धड़ाक्’ की आवाज हुई और बिरजू का शरीर एक ओर लुढ़क गया...उसकी बाईं भुजा लहूलुहान हो गई. वह घिसटता हुआ दीवार तक पहुँचा और उसके सहारे टिक कर बैठ गया.

मीना न रो रही थी और न ही कोई हरकत कर रही थी, वह बस आँखें फाड़-फाड़ कर अपने बाप को ताके जा रही थी जबकि मीना की माँ भी आवाक् खड़ी थी.

बिरजू ने अपने चेहरे पर जबर्दस्ती मुस्कान लाते हुए कहा, “मीना की माँ, मेरे दाहिने हाथ से किये गए पाप की सजा मेरे बाएँ हाथ को भोगनी पड़ रही है...जैसे मेरे द्वारा किये गए कुकर्मों का फल अब से मेरी दुलारी मीना को और तुम्हें भोगनी पड़ेगी...मुझे माफ़ कर देने की कोशिश करना तुम दोनों...”

अचानक से मीना की माँ की तंद्रा टूटी और वह उसके बाएँ हाथ के बहते हुए खून को रोकने का प्रबंध करने लगी.

इस पर बिरजू ने उसे रोक दिया और उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया. किसी प्रकार का प्रतिवाद किये बिना मीना की माँ वहीं पर बैठ गई.

बिरजू ने मीना को उसकी कॉपी और कलम लाने के लिए कह दिया. मीना ने भी उसकी आज्ञा का तुरंत पालन कर दिया.

बिरजू सादे पन्ने पर कुछ लिखने लगा...इस बीच उसके हाथ से खून बहता रहा.

बिरजू अपनी पत्नी से मुखातिब हुआ, “मीना की माँ, मेरे शरीर से बह रहे गंदे खून को बहने से मत रोकना...हो सकता है कि मैं थोड़ी देर में अचेत हो जाऊँ और फिर ये भी हो सकता है कि मैं शहर के अस्पताल ले जाते-जाते सदा के लिए सो जाऊँ इसलिए मुझे बचाने की कोशिश मत करना...मीना की माँ, मेरी कुर्बानी के बाद मेरे पैसे को पवित्र मान कर तुम मीना के साथ चुपके से अपनी माँ के घर चली जाना...मैंने इस कागज में अपना इकबालिया बयान लिख दिया है...तुम्हें

कोई परेशान नहीं करेगा...मैंने इसमें ये भी लिख दिया है कि मेरे शरीर को किसी मेडिकल हॉस्पिटल को दान में दे दिया जाए...ताकि किसी जरूरतमंद को मेरे अंग मिल सके...इससे दो फायदे होंगे...एक तो तुम्हें मेरे गंदे शरीर को छूने और इसका दाह-संस्कार करने से मुक्ति मिल जाएगी और दूसरे मेरे शरीर-दान से मेरा शरीर भी पवित्र हो जाएगा और तब शायद मेरा जन्म लेना सार्थक हो जाएगा..."

मीना की माँ ने सुबकते हुए उससे बस इतना ही कहा, "मैं आपको पहले भी कभी समझ नहीं सकी और आज भी नहीं समझ पा रही हूँ...आप जैसे पवित्र विचार वाले व्यक्ति से कैसे इतनी बड़ी गलती हो गई जी..."

"मीना की माँ...अब मैं तुम्हें कैसे बताऊँ कि मेरे जैसा लोहा अनजाने में एक पारस से छुआ गया और बस अब मैं सोना हो जाना चाहता हूँ..." बिरजू ने उनींदी-सी आवाज में कहा.

मीना की माँ की स्थिति ऐसी थी कि वह न तो गला फाड़-फाड़ कर रो सकती थी और न अपने आँसुओं को अपने अंदर जज्ब कर सकती थी. उसने अपने बिरजू का हाथ अपने हाथ में लेकर उससे सुबकते हुए कहा, "आज मुझे आप पर बड़ा गर्व हो रहा है जी..."

लेकिन, मीना की माँ की इस बात को सुनने के लिए बिरजू अब इस दुनिया में नहीं था...